क. विजय प्राप्त करने से पहले आराधना:

- **वाचा का नवीनीकरण (यहोशू 5:1-9)**
  - यद्यपि मिस्र छोड़े हुए 40 वर्ष से अधिक समय बीत चुका था, फिर भी इस्राएल अभी तक प्रतिज्ञा किए गए देश में प्रवेश नहीं कर पाया था। अब, उनके पैर उस पर चल रहे थे। अब "मिस्र की बदनामी" दूर करने और परमेश्वर के साथ वाचा को नवीनीकृत करने का समय आ गया था।
  - प्रथम फसह खाने से पहले, इस्राएली पुरुषों का खतना किया गया, क्योंकि कोई भी खतनारहित व्यक्ति इसमें भाग नहीं ले सकता था (निर्गमन 12:48)। क्योंकि उन्होंने पहली बार कनान में प्रवेश करने से इनकार कर दिया था, इसलिए वाचा टूट गई, और जंगल में किसी भी इस्राएली का खतना नहीं हुआ (यहोशू 5:5)।
  - वाचा को नवीनीकृत करने के लिए, उस भौतिक चिन्ह को दोहराना आवश्यक था (उत्पत्ति 17:10)। इस कार्य ने महत्वपूर्ण बात को सर्वप्रथम रखा। हमारे लिए यह अनुकरणीय उदाहरण है: "'इसलिये पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएँ भी तुम्हें मिल जाएँगी।'" मत्ती 6:33
- **कनान में पहला फसह पर्व (यहोशू 5:10-12)**
  - मिस्र से कनान तक, इस्राएल ने एक "परिवर्तन शैली" की प्रक्रिया का पालन किया, घटनाओं को उल्टे क्रम में दोहराया: **मिस्र** => खतना और फसह => लाल सागर पार करना => **रेगिस्तान** => यरदन नदी पार करना => खतना और फसह => **कनान।**
  - पहला फसह पर्व मिस्र से छुटकारे का प्रतीक था। नई पीढ़ी द्वारा मनाया जाने वाला दूसरा फसह पर्व, उनके द्वारा प्रतिज्ञा किये गए देश पर अधिकार करने का प्रतीक था।
  - क्रूस पर चढ़ने से कुछ समय पहले, यीशु ने इस संस्कार को नए प्रतीकों के साथ एक नया अर्थ दिया: मेमना रोटी बन गया, और लहू दाखरस बन गया।
  - वे अब हमारे मुक्तिदाता की देह और लहू के प्रतीक हैं, जो हमें मिस्र से बाहर निकालता है (अर्थात् हमारे पाप से बाहर निकालता है), और हमें प्रतिज्ञा किए गये देश में ले जाता है (1 कुरिन्थियों 11:23-26)

ख. पहाड़ों के बीच आराधना:

- **उपासना के लिए एक वेदी (यहोशू 8:30-31)**
  - मूसा ने आज्ञा दी थी कि कनान में प्रवेश करते ही एबाल पर्वत पर एक वेदी बनाई जाए और परमेश्वर की स्तुति की जाए (व्यवस्थाविवरण 27:5-7)। एबाल पर्वत पर ही क्यों, गिरिज्जीम पर क्यों नहीं?
  - वेदी और व्यवस्था, जिन्हें स्मारक पर लिखा जाना था और लोगों को पढ़ा जाना था, दोनों ही आशीषों और अभिशापों से संबंधित थे (व्यवस्थाविवरण 27:12-13)। आशीर्वाद गिरिज्जीम पर दिया गया था, और अभिशाप एबाल पर दिया गया था।
  - यीशु हमारे लिए श्राप बन गया, ताकि हम आशीष पा सकें (गलातियों 3:13-14)। यह वेदी हमारे लिए यीशु के बलिदान का एक स्पष्ट प्रतिरूप है।
  - विजय के बीच में, इस्राएल ने स्वयं को परमेश्वर के प्रति पुनः समर्पित करने के लिए एक समय की खोज की। यह हमारे लिए एक निमंत्रण है कि हम उनके उदाहरण का अनुकरण करें, तथा स्वयं को परमेश्वर के प्रति पुनः समर्पित करें, न केवल व्यक्तिगत रूप से, बल्कि परमेश्वर के चुने हुए लोगों के रूप में भी।
- **व्यवस्था को स्मरण रखें (यहोशू 8:32-35)**
  - एबाल पर्वत पर वेदी बनाने के बाद, यहोशू ने कुछ पत्थर खड़े किये और उन पर चूना पोत दिया। फिर उसने उन पर व्यवस्था की एक प्रतिलिपि लिखी [व्यवस्थाविवरण, जिसमें दस आज्ञाएँ और विभिन्न कानून, आशीष और शाप शामिल थे] (यहोशू 8:32; व्यवस्थाविवरण 27:2-3)।
  - अंत में, व्यवस्था को लोगों को पढ़कर सुनाया गया, जिसे दो भागों में विभाजित किया गया था - प्रत्येक पहाड़ की ओर एक (यहोशू 8:33-35)। इस तरह, परमेश्वर और उसके लोगों के बीच वाचा नवीनीकृत हुई।
  - यह हमारे लिए भी एक आह्वान है। परमेश्वर के शेष लोगों के रूप में, हमें समय-समय पर उसके साथ अपनी वाचा को नवीनीकृत करना चाहिए, यह याद करते हुए कि उसने हमें यहाँ तक कैसे पहुँचाया है और उसने हमें क्या-क्या आशीषें दी हैं।
  - हमारे व्यक्तिगत नवीनीकरण के अतिरिक्त, पवित्र प्रभुभोज हमें परमेश्वर के लोगों के रूप में नवीनीकरण का विशेष क्षण भी प्रदान करता है।

ग. उपासना के लिए एक विशेष स्थान:

- **पवित्रस्थान का निर्माण (यहोशू 18:1)**
  - यह भूमि इस्राएल द्वारा वश में कर ली गयी थी। यह क्षेत्र सबसे प्रमुख गोत्रों के बीच विभाजित कर दिया गया था, हालांकि सात गोत्रों को अभी तक उनका हिस्सा नहीं मिला था। रूबेन, गाद और मनश्शे के आधे गोत्र के योद्धाओं को यरदन नदी के पार उनके क्षेत्रों में भेज दिया जाना था।
  - गोत्रों के अलग होने से पहले, एक विशेष और आवश्यक कार्य किया गया: तम्बू का निर्माण, जो इस्राएल की उपासना का केंद्र था (यहोशू 18:1)।
  - पवित्रस्थान, परमेश्वर के दृश्यमान निवास स्थान के रूप में, एकता का वह बिंदु था जहाँ सभी लोग आराधना में एकजुट होते थे। परमेश्वर की उपस्थिति के बिना, भूमि पर अधिकार अर्थहीन था।
  - आज, जब अभी भी आधुनिक और उत्तर-आधुनिक राक्षसों पर विजय पाना बाकी है, तो यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि हम अपना ध्यान स्वर्गीय पवित्रस्थान पर केन्द्रित करें, जहां यीशु हमारे लिए मध्यस्थता करता है।